अध्याय सप्तम

भारत अमेरिका सम्बन्ध का भविष्य और सम्भावनाओं
भारत अमरीका सम्बन्ध भविष्य और सम्भावनाएँ

1. नव शीतयुद्ध के सन्दर्भ में—

शीत युद्ध की समाप्ति के बाद विश्व वातावरण में आये परिवर्तनों ने भारत—अमरीका 
देशों को अपने दिशाप्रद सम्बन्धों को पुनः मूल्यांकन करने का अवसर दिया है। अमरीका ने 
भारत द्वारा किये गये आर्थिक उदारीकरण उपयोग का गर्मजोशी से स्वागत किया है। क्योंकि 
इससे अमरीका बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को एक तरफ बहुप्रारूपीकित लाभ होगा। इस विशाल 
बाजार का व देश के प्राकृतिक संसाधनों का खुला दोहन कर सकेगी। इसीलिए भारत में 
सबसे पहले व सबसे अधिक पूर्वीनिवेश अमरीकी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने किया है 'भारत 
अमरीकी सम्बन्धों की उल्लेखनीय विशेषता वर्तमान एकतरफा व्यापार और पूर्वीनिवेश की खुली 
घट है।

मई 1998 में भारत ने सुखाल्म कारणों से परमाणु पश्चिमन किये। अमरीका ने भारतीय 
आवश्यकता को नज़रअंदाज करते हुये आर्थिक प्रतिबंधों की घोषणा कर दी। भारतीय 
वैज्ञानिक अनुसंधान सहयोग पर रोक तथा भारतीय वैज्ञानिकों के अमरीका गमन पर रोक 
लगा दी। अमेरिकी सत्र प्रतिष्ठान ने हमारी परमाणु पश्चिमन की कार्यवाही को विश्वासघात की 
संज्ञा दी। जो देश एक ध्रुवीय विश्व तथा एकल चौरसाहत का सपना बुन रहा हो किसी अन्य 
राष्ट्र भले वह लोकतान्त्रिक देश हो को परमाणु शक्ति बनते कैसे देख सकता था?

राजनीतिक और सामाजिक दृष्टि से भी उपरोक्त निष्कर्ष खरा उत्तरता हैं। इस तथ्य को 
रेखांकित करने की आवश्यकता नहीं कि अब अमेरिका एक मात्र वैश्विक महासमूह है और 
इसलिए उसके साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाये रखने में भारत की दिलचस्पी है। दूसरी ओर यह 
बात भी निर्विवाद रूप से कही जा सकती है। कि अमेरिका भारत की उपेक्षा नहीं कर सकता। 
क्योंकि उसकी जनसंख्या विश्व में चौथे के बाद सबसे अधिक है। उसके प्राकृतिक संसाधन 
विशाल हैं। उसने औद्योगिक, वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकी और प्रतिष्ठा के क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की है। 
और तीसरी दुनिया के राष्ट्रों में उसका महत्वपूर्ण स्थान है। और अन्त में भारत विश्व का 
सबसे बड़ा जनतान्त्रिक देश है।
भविष्य में भारत-अमेरिका सम्बन्धों की प्रकृति क्या हो सकती है, प्रस्तुत है अध्ययन के अनुसार तीन परिदृश्यों की परिकल्पना की जा सकती है। वे परिदृश्य हैं।

1. तनाव पूर्ण अथवा शानदार सम्बन्ध,
2. तनाव मुक्त अथवा मित्रवत सम्बन्ध 3. तनाव-सहयोग मिश्रित सम्बन्ध। इन परिदृश्यों में से कोन से परिदृश्य की उत्तर-दुश्च काल में बनने की सम्भावना दिखाई देती हैं। इस विषय में हम यहाँ विचार करेंगे।

जब हम भारत-अमेरिका सम्बन्धों के विगत पर दृष्टि डालते हैं तो हम देखते हैं कि निकसन काल में सम्बन्धों की प्रकृति मोटे तीर पर प्रथम परिदृश्य की थी। कौनसी काल में सम्बन्धों को मोटे तीर पर दूसरा परिदृश्य उभरा। रीगन और बुश कार्या में सम्बन्धों में जो परिदृश्य बना वह मोटे तीर पर दूसरा परिदृश्य था। उपरोक्त परिदृश्यों के निर्माण में कई कारक सक्रिय रहे, एवं कई प्रकार के मुद्दे— द्विपक्षिय, क्षेत्रीय और वैश्विक—उभरे जिनका विशेषता प्रस्तुत अध्ययन में किया जा चुका है। जो मुद्दे जो इन सम्बन्धों को गहनता से प्रभावित कर सकते हैं उन्हें गहराने, तिलींहित होने अथवा उनकी यथास्थिति के बने रहने की सम्भावनाओं का हम विश्लेषण करेंगे। ताकि यह दर्शाया जाए कि सम्बन्धों की उभरती प्रवृत्ति किस परिदृश्य को इंगित करती है।

2. पाक-चीन गठबंधन के सन्दर्भ में—

मेरे मित्र का मित्र मेरा मित्र हो सकता है, तो मेरे शत्रु का शत्रु भी मेरा मित्र होगा। सभी हुई इन्ही लाइनों के दायरे में भारत-चीन और पाकिस्तान आपस में तथा शेष पड़ोसी देशों के साथ व्यापारिक, राजनीतिक, सामरिक, सहयोग और साझेदारी तय कर रहे है। इसी के सूत्र पर कभी सीखे, तो कभी राष्ट्र हित के बहाने परोक्ष रूप से नौक पकडने की कोशिश हो रही हैं। भारतीय समुद्रक्ष क्षेत्र में उसकी सफ आहट का सुनाई देना इसी नीति का हिस्सा है।

चीन भारतीय समुद्र में अपना दबदवा बढ़ा रहा है जब कि दोनों देशों के बीच में तकरीबन 24 बिलियन डलर का हिपक्ष्य व्यापार है आर्थिक, व्यापारिक और फिर राजनीतिक ताकत की ओर केंद्रित रहने वाला चीन अब सामरिक साथ बढ़ाने के लिए तैयार हो रहा हैं। ऐसे में, भारत का विचार होना स्वाभाविक है।

हॉलाकिंग 1962 के बाद से चीन ने सीधे तौर पर भारत की ओंख नहीं दिखाई। लेकिन कभी चीन से बैठने भी नहीं दिया। वह पाकिस्तान समेत पड़ोसी देशों की सैन्य और संसाधन
के स्तर पर मदद करके भारत की ओंख में किरकिरी बना रहता है। खाता तौर पर पाकिस्तान का सरोगेट बनकर।

कृत्तिनीति के जानकार मानते हैं कि चीन की कोशिश भारत को लगातार दबाने की रहती है। इसके लिए वह पाकिस्तान का सहारा लेता है। इसी का साफ संकेत उसका भारतीय समुद्रों क्षेत्र में आना भी है।

वह पाकिस्तान, बांग्लादेश, म्यांमार, को संसाधन, समर्थन उपलब्ध कराता है। म्यांमार ने चीन के लिए अपना पोर्ट इस्तेमाल करने का दरवाजा खोल दिया है। इसके अंतर्गत, मर्गुई, और हेगी बन्दरगाह का जब चाहे इस्तेमाल कर सकता है। मालदीव के साथ सम्मेलन बढ़ाने की कोशिश रही है। श्री लंका के बैन्टोटा में भी वह सीपोर्ट विकसित करना चाहता है। श्री लंका की सरकार को इसका प्रस्ताव भी दिया जा चुका है।

चीन अभी भी पाकिस्तान को परमाणु हथियार और वैज्ञानिक मिसाइलें मुहैया करा रहा है। जब कि उसने अमेरिका को आश्वासन दिया था कि वह ऐसा नहीं करेगा। अमेरिकी खुफिया संस्था सेंटर इन्टलीजेंस ऐजेंसी ने ये जानकारी दी है। अमेरिकी कांग्रेस को दी गई ऐजेंसी की ताजा छवियों प्योर्ट में कहा गया है कि हम इस तथ्य से इन्कार नहीं कर सकते। चीन और पाकिस्तान के परमाणु हथियार कार्यक्रम से जुड़ी कई हस्तियों के बीच सम्पर्क लगातार बना हुआ है।

3. भारत—रूस—चीन गठबन्धन के सन्दर्भ में :—

भूतपूर्व प्रधानमंत्री अटल विहारी बाजपेई रूस के दौरे पर गये थे। यात्रा अत्यधिक रूढ़िवाली और चर्चा का विषय बनी। पर इसके कोई प्रोस एवं वास्तविक उपलब्धि पूर्णत: प्राप्त नहीं हो सकी। इस यात्रा के दौरान दोनों पक्ष “पाँचवी पीढ़ी का युद्धक विमान” संयुक्त रूप से विकसित करने पर सहमत हुये। रूस से भारतीय रक्षा सौदों के एक पैकेज पर दोनों देश बातचीत कर रहे हैं।

अटलविहारी बाजपेई के मौके पर दौरे के बाद रूस के रक्षा मंत्री सर्गेंट इवानोव रक्षा सौदों पर बातचीत करने भारत आये। रूस का भारत के साथ संयुक्त रक्षा सहयोग है।

गैर रक्षा व्यापार कभी भी भारत-रूस सम्बन्धों का मुख्य बिन्दु नहीं रहा भारत-रूस सम्बन्धों के सुनगरे दौरे में भारत का लगभग एक बौद्धिक विदेशी व्यापार रूस से होता था, अतः ये गिरावट नाटकीय है इन्डोरसियन ब्रह्मोस एयरोस्पेस लिमिटेड में रूस के प्रमुख शस्त्र
निर्यातक रोटेरो एक्सपोर्ट के साथ समझौता किया। जिससे ब्रह्मोस प्रक्षेपास्त्र प्रणाली के युद्धपोत और विमान संस्करणों को विश्व बाजार में बेचा जा सके। और इनका संयुक्त रूप से विपणन किया जा सके। पहले बार भारत ने किसी दूसरे देश के साथ मिलकर एक अत्यधिक युद्ध प्रणाली का विकास, निर्माण एवं विपणन किया है।

चीन के साथ भारत को भविष्य की आर्थिक महाशक्तियों बताये जाने से हम फूले नहीं समां रहे। पर तत्काल हकीकत यह भी है कि चीन बीते कुछ समय से भारत की घेरे बंदी कर रहा है। क्या वह हमारे पड़ोसी देशों से महज बेहतर रिश्ते कायम करना चाहता है? या हमारे पड़ोसियों के साथ मिलकर वह हमें अलग-अलग करना चाहता है? ऐसे में क्या होनी चाहिए हमारी रणनीति?

हालांकि यह मानने का सवाल नहीं है कि चीन भारत के साथ इस तरह का खुलकर सकता है, जैसा उसने वर्ष 1962 में किया था। समय बदल गया है और भारत मजबूत स्थिति में है। इसने अर्थ व्यवस्था के साथ-2 तकनीकी में भी बहुत प्रगति की है। इस दौरान भू राजनीति स्थिति भी तेजी से बदली है। भारत न सिर्फ परमाणु शक्ति है, बल्कि बेसुपर अभ्यास भी दावे पर लगी है। चीन जो आया करता है, उसका 50 कीसदी खाड़ी क्षेत्रों में आता है, इसलिए बीजिंग हिन्द महासागर में अपनी सम्पत्ति की रक्षा करना हर हाल में चाहेगा। यानी अगर भारत कुछ खो सकता है, तो चीन भी खो सकता है।

ये सारे तथ्य इसी ओर इशारा करते हैं कि चीन के अभियानों को भारत अनदेखा नहीं कर सकता। उसे चीन की काट के लिए तैयार रहना होगा, उस अनुसार अपनी रणनीति बनानी होगी। इस मामले में वह चीन की सक्रियता और आर्थिक क्षेत्र में लक्ष्य बनने की बीजिंग की उपलब्धि से सीख सकता है।
<table>
<thead>
<tr>
<th>सैन्य संस्थान</th>
<th>भारत</th>
<th>चीन</th>
</tr>
</thead>
</table>
| ऑफिस बताते हैं कि खाना मामले में चीन हमसे बहुत आगे है। | वायुसैनिक (लाख) | 1
| | लड़ाकू | 4 |
| | विमान | 852
| | 2,643 |
| टैंकर एयरक्राफ्ट | 4 | 10 |
| बजर (अरब दालर) | 20 | 40 |
| कुल सैनिक (लाख) | 13 | 24 |
| शत्रुसैनिक (लाख) | 11 | 16 |
| तेंक | 8,580 |
| टॉप | 5,625 | 17,700 |
| आम्बर पर्सनल कैरियर | 300 | 1,000 |

श्रेष्ठ— सूचना प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार की 2007 की वार्षिक रिपोर्ट।

4. ईराक युद्ध के सन्दर्भ में—

ईराक के विरुद्ध सैनिक कार्यवाही और देश पर कब्रों के कारण पूरे पश्चिम एशिया का माहौल खराब हैं। ऐसी परिस्थिति में कटर पंथी और अराजक तत्त्वों की ही बन सकती है। अतः इस पूरे भू-भाग में अस्थिरता का वातावरण व्याप्त है। सऊदी अरब में कटर पंथी वेतनासौंदर्यों के विरुद्ध शासन ने कार्यक्रम सुरू की है। इस पूरे भू-भाग पर रायनें—रागनें: ऐसी स्थिति उत्पन्न हो रही है, जो कभी भी विस्फोटक हो सकती है। ऐसा होना न केवल इस क्षेत्र बल्कि सारी जिलीयों के लिए भी बड़ी परेशानी का कारण बन सकता है। क्यों कि दुनिया का दो तिहाई ऊर्जा का श्रेष्ठ या खनिज तेल इसी क्षेत्र में है। विश्व सुगमुदय के लिए यह विशेष चिंता का कारण होना चाहिए, लेकिन मदां अमेरिकी प्रसारण को कौन समझाये? ईराक पर अमेरिकी हमले की भारत ने खुली भर्त्सना की क्यों कि ईराक हमारा गुट निरपेक्ष आन्दोलन का साथी रहा है। भारत के प्राचीन काल से मैसीपोटामिया (ईराक) धनिष्ठ सम्बन्ध
रहे हैं। इसलिए 8 अप्रैल, 2003 को लोकसभा ने ईराक पर अमेरिकी हमले के खिलाफ
निदान प्रस्ताव पारित किया। प्रस्ताव में कहा गया है कि सत्ता को जवाबदेशी बदलने के लिए
संयुक्त राष्ट्र की सहमति के बगैर की गई सैनिक कार्यवाही को स्वीकार नहीं किया जा
सकता। इसमें ईराक के लोगों के लिए गम्भीर सन्ताप और गहन सहानुभूति व्यक्त करते हुये
उनकी सहायता के लिए भारत की ओर से 100 करोड़ रुपये की सहायता देने का भी फैसला
किया गया। जिसमें विश्व खाद्य कार्यक्रम के तहत 50 हज़ार टन गेहूँ भी शामिल है।

आलोचकों के अनुसार बग़दाद पतन के एक दिन पूर्व भारत की संसद द्वारा आंग्ल
अमेरिकी गठबंधन के हमले की निदान का प्रस्ताव सर्व समस्ति से पारित करने विदेश नीति
की दृष्टि से एक हल्का व्यवहार था: यह प्रस्ताव अंतरराष्ट्रीय राजनय का कम तथा घरेलू बॉट
बैंक के राजनीति की नियामक ज्यादा था।

ईराक में शान्ति स्थापना के उद्देश्य से अन्य देशों से सेना मिलाने का अमेरिकी प्रयास
भी अभी अधर में ही लटका दिखाता है। तुर्की ने 10 हज़ार सैनिकों की फौज भेजने की
पेशकश अवश्य की है, लेकिन इसका तीव्र विरोध अमेरिका द्वारा गठित शासकीय परिषद्
द्वारा ही हो रहा है। इस मुद्दे पर एक तरह से अमेरिकी प्रसाधन ब्रेनर और परिषद् के बीच गम्भीर
टकराव की स्थिति उत्पन्न हो गई है।

ईराक में जंग थमने का नाम नहीं ले रही है। संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन और उनके
समर्थक देशों की सेनाओं को निम्न नये प्रतिरोध का सामना करना पड़ रहा है। भिन्नता के
बावजूद ईराक अमेरिका के लिए एक विरोधपूर्ण सावित हो रहा है। उसकी सेनाओं यहाँ
इस कदर फस गई हैं कि उसके लिए कोई समान जनकसमाधान नजर नहीं आ रहा है। यहाँ
सामाजिक विरोध प्रतिरोध युद्ध के दायरे का विस्तार होता जा रहा है। और वह नई
बुनियादों का स्पर्श करता लग रहा है।

5. अफगान युद्ध के सन्दर्भ में :-

अमेरिका के वर्ल्ड ट्रेड टावर पेंटाग्लन तथा अन्य सत्ता प्रतिष्ठानों पर आतंकवादी हमलों
के लिए अफगानिस्तान में सत्तारुढ़ तालिबानी सरकार एवं अलकायदा को जिम्मेदार ठहराया
गया। अमेरिका ने अलकायदा के सरगना ओसामाबिन लादेन को गिरफ्तार करने के लिए
अफगानिस्तान पर हमला किया क्योंकि सन्देह था कि ओसामा बिन लादेन अफगानिस्तान में
छिपा हुआ है। अफगानिस्तान की सत्ता पर काबिज तालिबान सक्रिय रूप से वैशिक आतंकवाद
का समर्थन दे रहे थे। अमेरिका के नेत्रवत में की गई सैन्य कार्यवाही में अफगानिस्तान में तालिबान को सत्ता से उखाड़ हुई। अफगानिस्तान में अशांति के इस दौर के बाद हामिद करजाई को अफगानिस्तान का पहला राष्ट्रपति नियुक्त किया गया। और वह बाद में भी इस पद पर निवाचित हुए।

हाल में ही भारतीय प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने अफगानिस्तान की ऐसे समय में यात्रा की है जब अफगानिस्तान की आन्तरिक सुरक्षा काफी कमजोर है।

अफगानिस्तान की अर्थव्यवस्था पूरी तरह अंतर्राष्ट्रीय सहायता पर निर्भर है। और 5 अरब अमेरिकी डॉलर का अफ्रीका का कारोबार इस देश की सामान्य विकास दर में सबसे बड़ा घटक है। अफगानिस्तान के पास न तो अपनी आन्तरिक व वाहय सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए संसाधन ही हैं और न ही आर्थिक रूप से आत्म निर्भर बनने के संसाधन ही हैं।

निश्चित रूप से यह एक निराशाजनक स्थिति है जो यह बताती है कि सिकन्दर महान के दिनों से लेकर आज तक इस पहली देश में विश्व के बड़े देशों के स्वार्थी खेलों के चलते कितने उतार चढ़वाव देखें हैं। पूर्व में अफगानिस्तान सोवियत संघ और विश्व की दूसरी बड़ी ताकत अमेरिका के स्वार्थी खेल का मोहरा रहा है।

निष्कर्ष—

भारत ने यह संकेत दिया है कि अफगानिस्तान में पुराने तालिबानी नेताओं का पुनरुद्धार अस्वीकार होगा। भारत काबुल को परिवहन तथा बिजली जैसे आधारभूत संरचना के साधनों में सहायता प्रदान कर रहा है भारत काबुल को जिस क्षेत्र में वेश कीमती सहयोग उपलब्ध करा सकता है। वह अफगान सुरक्षा बलों को प्रशिक्षण और उपकरणों से लेते करने के रूप में सैन्य सहयोग। सौजन्य संकेत है कि अमेरिका और नाटो के नेतृत्व वाले अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा बल में शामिल अन्य राष्ट्र जितनी जल्दी सम्मिल हो अफगानिस्तान से अपनी सेनाएँ वापस बुना लेगें। भारत के लिए यह दीर्घ कालिक हित में होगा। कि वह 3 से 5 वर्षों की अवधि तक अफगान सेना और पुलिस बलों को प्रशिक्षण करने में मदद करे।

6. भारत के विकसित बाजार के सन्दर्भ में—

शीत युद्ध कालीन विश्व व्यवस्था के निर्धारक तत्त्व सैन्य कारक के किन्नुर शीत युद्धोत्तर विश्व व्यवस्था में इनका स्थान आर्थिक कारकों ने ले लिया है। आज दुनिया में अमेरिकी एवं रूसी हाथियारों के टकराव के बजाय डालर, पाउंड और यून आपस में टकरा
रहे हैं। आज शक्ति को सैन्य सन्दर्भ में नहीं बल्कि आर्थिक सुदृढ़ता के सन्दर्भ में आंका जा रहा है।

ऐसे में जब कि भारत विश्व की चौथी प्रमुख आर्थिक शक्ति बन गया है भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा देश तथा मध्यम वर्ग को अवधारिता करने वाला सबसे बड़ा देश है। इसीलिए विश्व की तामाम बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ भारत में अपने व्यापारिक हितों को देख रहीं हैं। सबसे अधिक पूंजी निवेश करने वाले देशों में अमेरिकी बहुराष्ट्रीय प्रथम है। अमेरिका एवं भारत के बीच मुक्त व्यापार समझौते के अनेक दौर चल चुके हैं। भारत एवं अमेरिका सैन्य जैव तकनीक कृषि आदि के क्षेत्र में समझौता कर चुके हैं। जहाँ अमेरिका का हित भारतीय बाजारों के दोहन का है। वहीं भारत का हित अमेरिका से सैन्य समबंध कसौटों तथा सैन्य तकनीकी हॉस्टिल करना।

आज भारतीय बाजार अमेरिकन उत्पादों से भरे पड़े हैं। अंकल चिप्स कॉलेजेट ब्लोजम, लाक्स, पेप्सी, एवं कोकाकोला ने भारतीय जनजीवन को पूर्णतया विजित कर लिया है। आर्थिक उपनिवेश वाद अपने चरम विन्दु पर है। हमें हमारे ही बाजारों में क्लीन बोल्ड कर दिया गया है। यह वित्त का विषय है।

वर्तमान में भारत के संसाधनों का भारी मात्रा में उपयोग अमेरिकी लोग कर रहे हैं। मार्केट वार्फेयर (बाजार के युद्ध) में अमेरिका जीत रहा है। अमेरिका अपने स्टार चैनल व अन्य सूचना माध्यमों के जरिये भारतीय जनता में अपने उत्पादों के लिए उपबोहकता वर्ग तैयार कर रहा है। ऐसे में भारत को सचेत रहने हुए अमेरिका से द्विपक्षीय समानता पर आधारित, आर्थिक एवं व्यापारिक समबंधों पर बल देने की आवश्यकता है।

7. अमेरिकन पेंटागन के बाध्य की चाबी भारत को दी जाये या नहीं—

शीत युद्ध की समाप्ति के बाद विश्व वातावरण में आये परिवर्तनों ने अमेरिकन रक्षा मंत्रालय पेंटागन ने इस एक धुरीय विश्व में समग्र विश्व के अधिकांश महाद्वीपों के लिए रणनीति का प्रतिपादन किया है। वर्तमान में अमेरिका सबसे ज्यादा एशिया के प्रति आकर्षित है क्योंकि आगामी विश्व का निर्धारण यूरोप नहीं बल्कि एशिया करेगा। पश्चिम एशिया में अमेरिका का हित पेट्रोलियम के विशाल प्रकृतिक बहनारों पर कब्जा करना है। वहीं दक्षिण एशिया में अवस्थित भारत एवं चीन जो वर्तमान में बड़ी शक्तियों के रूप में उदित हो रहे हैं के साथ अपने सता समीकरणों को सन्तुलित करना। इसीलिए शीत युद्ध के परामर्श के बाद
अमेरिका ने भारत द्वारा किये गये आर्थिक उदारीकरण के उपायों का तथा अन्य मामलों में सहयोग का आक्षेपण दिया।

जब कि समस्त विश्व आतंकवाद जैसी ज्वलन्त समस्या से प्रभावित है अमेरिका का भारत के नजदीक आना उसके हित में है। रूस,चीन तथा भारत की तिकड़ी को लोटने हुये भारत को अपनी ओर आकर्षित करना एवं उससे आर्थिक सामरिक, एवं तकनीकी समर्थन बनाने की ओर अघि रहो न केवल भारत बल्कि अमेरिका के भी हित में है।

अमेरिका ने भारत के साथ निम्न समझौतों में पहल की है— 1. उच्च तकनीकी आयुष्य के संयुक्त विकास में सहयोग 2. उच्च तकनीकी सहयोग गुप्त की स्थापना 3. मुक्त आकाश समझौते की संभावना 4. कृषि जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में शोध और विकास को बढावा। 5. भारत एवं अमेरिकी सैन्य अभ्यासों पर बल।

वैश्विक शान्ति रक्षा क्षमता के विस्तार करने के लिए अमेरिकी प्रशासन ने भारत से आठ विकसित देशों के प्रायोजन में समिलित होने का आग्रह किया।

निष्कर्ष: पेंटागन ने इस तथ्य को स्वीकार कर लिया है। कि अब अनुकूल समय आ गया है कि आपसी विवादास्पद मामलों जैसे ह्नी अर्थी पदार्थों, तकनीकी सामरिक एवं व्यापार सम्बन्धी सारी कुकटियों का दूर कर लिया जाए, इसमें दोनों देशों का हित सुरक्षित है।

अब विचारणीय प्रश्न यह है कि क्या भारत और अमेरिका स्वाभाविक मित्र हैं? भारत में अमेरिका के राजदूत रावटर ब्लैक ने पूर्व में कहा था कि भारत और अमेरिका प्राकृतिक सहयोगी हैं दोनों देशों को मिलकर विश्व में राजनीतिक स्थिरता स्थापित करनी चाहिए जिससे सभी देश स्वतंत्रता और समृद्धि हासिल कर सकें। स्वतंत्रता एवं समृद्धि को वे प्रयोग उद्देश्य बताते हैं। वे मानते हैं कि स्वतंत्रता एवं शान्ति से संबंधित स्वयं हासिल हो जाएगा। हमारा मानना है कि इस मुद्दे पर पुनर्विचार की सम्भावना है। स्वतंत्रता का अर्थ होता है ताकतवर का बोलवाला यदि कालेज के मैस के बच्चे रोटी खाने के लिए स्वतंत्र हों तो ताकतवर बच्चा अधिक रोटी ले लेगा और कमजोर को कम मिलेगी। मनुस्मृति में राजा का हिंदायत दी गई है कि वह कमजोर की क्षमा करें अथवा ताकतवर उन्हें इस प्रकार उत्त्वित करते जैसे आग पर मछली को भूंसे करता है। जाहिर है कि स्वतंत्रता एवं समृद्धि समाज का अन्तिम मानदण्ड नहीं हो सकते इनके ऊपर भी कुछ और है जनहित अथवा धर्म। ब्लैक बिल कहते हैं, "अमेरिका की योजना है कि वह अपनी सैन्य ताकत एवं प्रभाव का उपयोग करके एशिया में ऐसी राजनीतिक
व्यवस्था बनाये जिसमें अमेरिका एवं उसके सहयोगी स्वतंत्रता पूर्वक समृद्धि हासिल कर सकें यानि सैन्य ताकत से बलशाली समृद्धि हासिल करेंगे। इस प्रकार पेंटागन का प्रमुख उद्देश्य एशिया में अपने राष्ट्रीय हितों को पूरा करने के लिए किसी न किसी न्यूज़ राष्ट्र की आवश्यकता है। भारत जो कि विश्व की भारी महाशक्ति है उससे जुड़ना पूर्णतया अमेरिकन राष्ट्रीय हित का पूरक है।

8. सामरिक मित्रता की संभावनाएँ—

भारत को प्रबुद्ध मानना में खा सामग्रियों की खोज में जिसमें मुख्य हैं विशेष सैन्य दस्तों के लिए हल्के रस्ते, जलयान, ग्राउंड सेन्सर्स, और कैमिकल सूट्स भारत को आधुनिक राडारों की आवश्यकता हैं। इजराइल द्वारा भारत को ऐसे—2 एंटीमिसाइल प्रणाली की बिक्री के मामले में अमेरिका अनुनतत्कुल रहा है। यह एंटीमिसाइल प्रणाली अमेरिका और इजराइल दोनों के सहयोग से विकसित की गई है परमाणु सशक्तता के बावजूद भारत ने अमेरिका को इस बात से आश्वात करने का प्रयास किया है कि वह उसके यहाँ से आयातित उच्च तकनीकी को किसी दूसरे मद में नहीं लगायेगा। इस उद्देश्य से दोनों देशों के बीच एक उच्छ तकनीकी सहयोग समूह का गठन किया गया। अमेरिका भारत को विशेष किताब की आपूर्ति करने का इच्छुक है और सुख्स रामरती मंत्रिपरिषद कमेटी (सी. सी. एम.) ने ऐसे यज्ञों के अधिग्रहण को हरी झंडी दे दी है जो खुले वैश्विक टेंडर्स द्वारा होगा।

दो वर्षों के सतर्क विचार—विमर्श के बाद पहलंग गहन स्वरूप भारत अमेरिकी युद्धायास भारत के उत्तर पूर्व के जंगलों में सम्पन्न हुआ जिसमें दोनों सेनाओं ने आतंकवाद का सामना करने सम्भवी उच्चायास किया। अमेरिका ने मिसाइल सुरक्षा कवच सहित उच्छ तकनीकी आयुर्ध प्रणाली के समयुक्त विकास के लिये भारत के सामने पुनः प्रस्ताव रखा है। भारत—अमेरिकी समयुक्त सुरक्षा नीति ग्रुप (डी. पी. जी.) की बैठक में अमेरिकी राज्य के अवर सचिव डेंगलस जे. फीथ द्वारा यह प्रस्ताव भारत के सामने प्रस्तुत किया गया। पदाधिकारी सूची के अनुसार दोनों देशों के जंगलों से सुरक्षा व्यापार और उच्छ तकनीकी आयुर्ध प्रणाली में सार्थक प्रगति की है। पेंटागन ने विमानों की प्रक्षेपण के चेतावनी और जवाबी प्रणाली को अनुमति दे दी है।

Page 220
अमेरिका भारत की नागरिक, नामिकीय और अंतरराष्ट्रीय सुविधाओं के उपकरणों से निर्यात नियंत्रण समाप्त करेगा। यह अमेरिका द्वारा विस्तार की चिन्ताओं पर भारत द्वारा ध्यान दिये जाने की प्रति बदलता के बाद समझ हुआ है।

इसी परिप्रेक्ष्य में भारत अमेरिका के बीच आणविक समझौता सम्पादित होने जा रहा है। जिसके अंतरगत अमेरिका भारत को शान्तिप्रद कार्यों के लिए आणविक समर्थन देना चाहता है। लेकिन बिडम्बना यह है कि आणविक तकनीक के प्रश्न पर अमेरिका, पाकिस्तान और भारत को एक ही नजरिये से देख रहा है अमेरिका को इस बात का एहसास नहीं है कि भारत और चीन के बीच सम्बन्ध कैसे हैं? अमेरिका लगातार भारत की सुरक्षा चिन्ताओं को अनदेखा करता रहा है लेकिन वर्तमान में स्थिति में बदलाव आ रहा है जो उपरोक्त वर्षन से स्पष्ट है। भारत को इस बात का संभव है कि विश्व समुदाय ने अन्तरांत: पाकिस्तान की ओर से आणविक प्रसार के खतरों की ओर ध्यान देना आरम्भ कर दिया है।

भारत को यह आशंका अवश्य रही है कि निर्णायक रुख की उसकी कोशिशों में शायद सबसे पहले उसे ही निशाना न बना दिया जाए। ऐसे में वह अपनी आणविक शक्ति को एक कवच के रूप में बनाये रखना चाहता है। अपने सुरक्षा हितों के साथ कोई भी समझौता किये बिना आणविक निर्णायक रुख के लिए नये रास्ते और उपाय ढूँढकर भारत शान्ति के लिए अपनी प्रति बदलता की पुरानी पहचान को फिर से स्थापित करना चाहता है।

9. क्षेत्रीय शक्ति, लोकतन्त्र, स्वत्तन्त्रता, मुक्त व्यापार—

भारत विश्व की उभरती हुई विश्व शक्ति है। भारत ने आर्थिक, कूटनीतिक, राजनीतिक, औद्योगिक, तथा तकनीकी क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति की है पिछले कुछ वर्षों में भारतीय शिखर नेतृत्व द्वारा अथवा इसके समकक्ष विश्व के लगभग सभी महत्वपूर्ण राष्ट्रों के नेताओं द्वारा भारत की यात्राओं से कूटनीतिक एवं राजनीतिक स्तर पर नई दिल्ली के कद में आशातीत बढ़ोतरी हुई है। भारत के आसियान के साथ सहयोग में जवरदस्त बढ़ोतरी हुई है। सरकार के घोर आलोचक भी वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों में इससे बेहतर परिणाम प्राप्त कर पाने की कल्पना नहीं कर सकते।

भारतीय विदेश नीति के क्षेत्र में पिछले कुछ वर्षों में वैश्विक और कार्यान्वयन के स्तर पर महत्वपूर्ण परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। पहले तीसरी दुनिया के देशों के प्रति सहयोग को हड़ की सीमा तक प्राथमिकता दी जाती थी। अमेरिका के प्रति शंका का भाव रहता था। गत
तथा वर्तमान सरकार ने विदेश नीति के आयामों को विकसित करते हुये विश्व के शक्तिशाली राष्ट्रों के साथ बराबरी के आधार पर समबन्धों को विकसित करने पर विशेष ध्यान दिया। इन सभी कदमों को उठाते समय देश की प्रतिक्षा जरूरत को सबसे अधिक महत्व दिया गया है। भारत को परमाणु शस्त्र क्षमता सम्पन्न राष्ट्र घोषित करने के बाद शत्रु एवं धूर्त राष्ट्रों के मिसाइल हमलों से बचने तथा पूर्व सूचना प्राप्त करने के उद्देश्य से नई दिल्ली ने अमेरिका के विवाद पर 'नेशनल मिसाइल डिफेंस कार्यक्रम' को अपना समर्थन दिया।

इस तरह पिछले कुछ दर्जन से चले आ रहे विदेश नीति के सैद्धांतिक पहलुओं से आये जाकर व्यवहारिक पूर्ण को विकसित करने का प्रयास किया गया।

भारतीय लोकतंत्र स्वतंत्रता के छ. दर्जनों से निरंतर लोकतात्त्विक परम्पराओं तथा व्यवस्था का अनुपालन करना है सरकार के शीर्ष पर विराजमान व्यक्तियों के चेहरे बदले है। लेकिन भारत राष्ट्रीय हितों के अनुसार निरंतर चलायमान है भारत के सभी प्रधानमंत्रियों ने देश को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

विश्व व्यवस्था में आये क्रांतिकारी परिवर्तनों के फलस्वरूप भारतीय विदेश नीति में भी व्यवहारिक बदलाव आ रहा है भारतीय विदेश नीति में परिवर्तन के पीछे महत्व पूर्ण कारक हैं—
1. सोवियत संघ का एक राष्ट्र के रूप में अवसर के साथ उसकी हंगामा तथा फायदों का लाभ
2. पंजाब एवं कश्मीर में पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित आतंकवाद से निपटने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता,
3. कश्मीर मुद्दे को संयुक्त राष्ट्र संघ की सूची से कश्मीर मुद्दे को बाहर रखने के लिए आवश्यक सहयोग
4. संयुक्त राष्ट्र परिषद में एक की प्रस्ताव प्राप्त करने का प्रयास।

गत 8 वर्षों में भारतीय शीर्ष नेतृत्व द्वारा जो उपक्रम हुई हैं वे इस बात के लिए हमें आश्वासन करते हैं कि चाहे अमेरिका हो, चाहे रूस या युनाइटेड किंग्डम का अन्य कोई छोटा बड़ा देश भारत समस्तीपुर संसार के लिए राजनीति करने में सक्षम देश है।

अन्ततः यह स्वयं सिद्ध है कि भारत विश्व में एक विस्तृत भू-भाग और प्रचुर प्राकृतिक संसाधन, कुशल, मानव संसाधन, और विशाल जनसंख्या वाला देश है। भारत सूचনा प्रौद्योगिकी तथा संचार तथा आधुनिक विकास के सभी प्रतिमाओं के क्षेत्र में प्रगति कर रहा है। विश्व मामलों में भारत की सुदीर्घ परम्परा रही है इसका सांस्कृतिक अतीत अन्यत्त गौरव मय
रहा है। इसका भविष्य अत्यन्त उज्ज्वल है और 2020 तक भारत विश्व की प्रमुख शक्ति होगा। इसका क्षेत्रीय शक्ति से उभरती हुई विश्व शक्ति के रूप में प्रयास जारी हैं।

10. विश्व शान्ति व व्यवस्था:—

राष्ट्रपति कैनेडी ने अनु 1961 में ठीक ही कहा था कि “इन हथियारों को नष्ट करना ही होगा वरना वे हमें नष्ट कर देंगे एवं यह धर्ती किसी के जीवित रहने योग्य ही नहीं रह सकेगी।” यदि परमाणु युद्ध हुआ तो ये बम इस पृथ्वी से मानवता का समूल नाश कर देंगे। यदि युद्ध केवल उत्तरी गोलार्ध में होता है तब भी इसके परिणाम सम्पूर्ण विश्व को भुगतने होंगे। परमाणु युद्ध के बाद धर्ती का तापमान 30°C से 40°C तक परिवर्तित हो जायेगा। पृथ्वी के सभी जीव जन्तु काल के गाल में समाने के लिए बाद हो जाएंगे।

मानव जाति के समुख पहले भी ये संकट आये थे परन्तु आज समस्या शान्ति स्थापित करने की नहीं है वरन् मानव मात्र के अस्तित्व की है। टॉयनबी के शब्दों में, "स्थिति की विकटता अकल्पनीय है। परमाणु अस्त्रों के कारण युद्ध का अर्थ ही महाविनाश हो गया है।" चर्चित ने उचित ही कहा था, "क्या विद्वेष से कितना तरह विवाह की उस स्थिति में पहुंच गया है जहाँ हमारी सुखा आण्विक शक्ति की भयंकरता के कारण ही सुरक्षित रहेगी और मानव जाति का अस्तित्व महाविनाश की सम्भावना के बय पर ही टिका रहेगा।" इससे पहले कई संकटों को मानव जाति ने पार किया है पर इतिहास इसका साक्ष्य है कि मानव जाति को जीवित और स्वतंत्र रहने के लिए अधिकाधिक मूल्य चुकाना पड़ा है। आज केवल शोषण और स्वतंत्रता से मुक्त, दुःख दारिद्र्य से मुक्त आत्मा और विश्वास की मुक्ति ही नहीं प्राप्त करनी है वरन् अस्तित्व और विनाश के निरंतर भय से मुक्त प्राप्त करनी है। लिबिने ने इसी को इस प्रकार व्यक्त किया है कि विश्व शान्ति की असफलता मानव जाति के अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह साबित होगी।

जैस डक्कूट बटन अपनी पुस्तक इंटर नेशनल रिलेशन्स पुष्ट 97–98 में लिखते है न हम युद्ध को समाप्त कर सकते हैं, न आज युद्ध को संचालित करने की पूरी क्षमता हमें है और विजयी होकर पुर्निर्मित का तो प्रश्न ही नहीं है।

ऐसे निराशामय माहौल में जब विश्व शान्ति को लेकर राजनीतिज्ञ विचारक, अन्तरराष्ट्रीय विचारकों के विवेचक सभी इस संकट के आभाष से भयभीत हैं तथा नियम मानो सारी मानव जाति को उस ओर ले जा रही है जहाँ वह जाना नहीं चाहती। अणु शक्ति पर नियंत्रण पाने
के लिए भारत और अमरीका सार्थक कूटनीतिक प्रयास कर सकते हैं। जैसे हाल में भारत ने आणविक शक्ति के शान्तिप्रद उपयोग को लेकर अपनी प्रतिबद्धता भारत अमरीका भावी आणविक समझौते में दिखाई है।

भारत की विदेश नीति सदैव ही विश्व शान्ति की समर्थक रही है। भारत ने प्रारम्भ से ही यह महसूस किया है कि युद्ध और संघर्ष नवोदित भारत के आर्थिक और राजनीतिक विकास को अवरुद्ध करने वाला है। अगस्त 1954 में पणिकर ने कहा था, "भारत को इस बाल की बड़ी चिंता है कि उसकी प्रगति को तथा सामान्य रूप से मानव जाति की उन्नति को संकट में डालने वाला कोई युद्ध न हो।

भारत में अन्य पडोसी देशों के साथ भी विवादों का निपटारा शान्तिमय साधनों से किया है।

भारत ने नवम्बर 1996 में चीन के राष्ट्रपति जियांग जिन्निंग की भारत यात्रा के दौरान सीमा पर तनाव कम करने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम उठाते हुए एक दूसरे पर हमला नहीं करने या वास्तविक नियंत्रण रेखा का अतिक्रमण नहीं करने तथा सीमा पर फोंजों तथा हथियारों की संख्या कम करने का संकल्प लिया।

भारत ने शुरू से ही विश्व शान्ति के लिए निशानीकरण को परम आवश्यक माना है। भारत ने 25 जनवरी 1996 को निशानीकरण सम्मेलन में सौटीनेरों के बारे में एक वक्तव्य दिया था। जिसमें कहा गया है कि 1. व्यापक परीक्षण प्रतिबन्ध संधि सौटीनेरों को सार्थक बनाने के लिए यह जरूरी है कि इसे विश्व व्यापी निरस्त्रीकरण के संदर्भ के साथ जोड़ा जाए और एक समय बद्ध रूप रेखा के अन्तर्गत सभी नाभिकीय हथियारों की समाप्ति के लिए संघर्ष किया जाए।

2. व्यापक परीक्षण प्रतिबन्ध संधि में ऐसी किसी बाल की गुंजाई नहीं रह जानी चाहिए, जिसकी आड़ में नाभिकीय हथियारों के निरंतर विकास एवं परिक्रमण के उद्देश्य से विभाजन अथवा गैर विभाजन गतिविधियों की जा सकें।

यद्यपि भारत में सुरक्षा कारणों की वजह से आणविक परीक्षण कर चीन के एकाधिकार को तोड़ दिया है। भारत दो-दो अविश्वसनीय पडोसी राष्ट्रों से घिरा है जिन्होंने भारत के शान्तिमय प्रयासों का मजाक उड़ाया है। इसीलिए भारत शान्ति की कूटनीति और सदभाव के
साथ–साथ अपने को समृद्ध क्षेत्र में पूर्णतया मजबूत स्थिति में रखना चाहता है। भारत का अमेरिका की ओर जुकना बहुत कुछ सामरिक कारणों से भी है।

1. हालांकि अमेरिकी जनता ने सदैव विश्व शांति को ही वरीयता दी है, किन्तु समय–समय पर अमेरिकी राष्ट्रपति विश्व शांति पर अपना दबदबा स्थापित करने वाले चक्कर में सैनिक हस्तक्षेप करते रहते हैं। विश्व सामरिक शक्ति के विश्लेषक स्वीकार करते हैं कि अमेरिका अपने वर्तमान अस्त्रों के जखीरे से पूरे विश्व को तीन बार ध्वस्त कर सकता है। विश्व में प्रथमता जापान पर अणु बम का इस्तेमाल उसने स्वयं किया और आज भी विश्व के सर्वाधिक संहारक अणु बम उसी के पास हैं। वैलिस्टिक मिसाइल प्रतिबन्ध जिसका करार उसने रूस के साथ किया उसका स्वयं पालन नहीं किया। उसे थोरे विवाद विस्फोट के बाद भारत पर प्रतिबन्ध लगा दिया। उसकी इच्छा है कि विद्वंबक संघर्ष करना उसका ऐकाधिकार है और शेष सभी राष्ट्र अपनी सुरक्षा उसी से हथियार खरीद कर करें। अमेरिका ने सदृश अपने साथ समय संयुक्त राष्ट्रसंघ तथा सुरक्षा परिषद और जर्मनी और फ्रांस जैसे अपने परम्परागत मित्रों की भी अनदेखी की।

द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद विश्व में शांति और न्याय पर आधारित व्यवस्था हो इस मंशा से राष्ट्र संघ स्थापित हुआ था। ऐसे में यदि अमेरिका जैसी महाशक्तियों ही इस विश्व संस्था का सम्मान नहीं करेंगी। तो विश्व शांति की कल्पना मृगमारिणिका साधित होगी।

13
References:-

1. हिन्दुस्तान 20 अगस्त 1996 पृष्ठ 19
   हिन्दुस्तान एक्सप्रेस 18 अगस्त 1999 पृष्ठ 16
2. 3- Foreign Affairs (U.S.A) April 2004, Page-112
4- India and America, K.R. Narayan, NewDelhi, Page- 107-8 Pub.2005
5- Nuclear India, 27 Nov. 2001 Page-71
7- डेनिस कुक्स, हिन्दुस्तान एक्सप्रेस 18 अगस्त 1999 पृष्ठ 16
   हिन्दुस्तान एक्सप्रेस 18 अगस्त 1999 पृष्ठ 16
10-राष्ट्रदूत, भारत—अमेरिका संबंध, 20 जून 1993 जयपुर पेज— 18
11. अमेरिका, भारत, पाक के बीच मध्यस्थ, हिन्दू 10 नवम्बर 2001 पेज0–10
12. तिवारी स्थानचयन, बढ़ रहा है, भारत—अमेरिका सहयोग, समाचार जगत,19 जनवरी 2006
   2003.